International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Volume 02, No. 01, January - March, 2020, pp.213-216

गांधी की प्रासंगिकता

डॉ. आभा राठौड़*

परिचय

भारतीय समाज की प्रवृतियां कालखण्डों के अनुसार सदैव परिवर्तित होती रही हैं। आधुनिकिकरण के वर्तमान दौर में भारतीय समाज भी विश्व व्यवस्था के मापदण्डों के अनुरूप बदल रहा है क्योकि परिवर्तन सतत् नियम है जो किसी भी समाज के जिंदा होने को प्रमाण भी है। गांधी वादी परिपेक्ष्य में यही सतत् परिवर्तन के नियम ने एक ऐसी विभ्रम की स्थिति उत्पन्न की जिसके कारण गांधीजी की सर्वकालिक प्रासंगिकता पर प्रकटतः प्रश्न चिन्ह प्रतीत होने लगता है।

वर्तमान में विश्व एवं भारतीय सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों में गाँधी और उनकी समसामयिक प्रांसगिकता एक सिक्के के दो पहलू से जान पडते है। गॉधी उपरोक्त भारतीय परिस्थितियों में सदैव ही एक समाधान मूलक मानक के रूप में उपस्थित व प्रस्तुत रहते है। ऐसा होने के पीछे भारत में व्याप्त वे सभी समस्याएँ हैं जो आज भी भारत और भारतीयों के विकास में बाधक के रूप में मुँह बाये खडी है ।

आज का समाज आर्थिक विसंगतियों, सामाजिक पतन, पर्यावरणीय क्षति की ओर जा रहा है। राजनीतिक मूल्यों एवं आदर्शों से अलग होकर पूर्णतः स्वार्थ पर केन्द्रित हो गई है। विश्व समाज नस्लवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद से ग्रस्त है। शांतिूपर्ण जीवन की आशा धूमिल होती जा रही है। भय, कुंठा, अवसाद, उग्रता के मनोभाव बढ़ रहे हैं। विश्व में परमाणु अस्त्रों की दौड़ बढ़ती जा रही है। आतंकवाद ने वैश्विक रूप धारण कर लिया है आई.एस.आई.एस. जैसे आतंकवादी संगठन आतंक के बल पर विश्व साम्राज्य का सपना संजो रहे हैं। वैश्वीकरण व उदारीकरण की नीति किसानों को आत्महत्या करने पर मजबूर कर रही है। विश्व व्यापार संगठन के माध्यम से विकसित राष्ट्र विकासशील राष्ट्रों का दोहन कर रहे हैं। ऐसे में गांधी और उनका चिन्तन ज्यादा प्रासंगिक एवं उपयोगी है। गांधी के समग्र दर्शन में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक पक्ष के विचारों में समतामय समाज की रचना की सद्इच्छा स्पष्टतः परिलक्षित होती है। ऐसा कतई नहीं है कि भारतीय मनीषियों ने गांधी को राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करने के लिए ही उनकी छवि का इस्तेमाल किया है। वरन् गांधी के विचार और दर्शन आज भी भारतीय समस्याओं के रूप में कारगार हो सकता है।

* सह–आचार्य, राजनीति विज्ञान, राजकीय महाविद्यालय, सांभर लेक, जयपुर, राजस्थान।

सर्वप्रथम शांति के क्षेत्र में देखें तो भारत जो कि विश्व का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश है, में आज भी शांति एवं व्यवस्था कायम है। इसके पीछे गांधी का चमत्कारिक नेतृत्व है, जो आज भी भारत में होने वाले व्यापक स्तर के सामाजिक और राजनीतिक आन्दोलनों को हिंसक नहीं होने देता। क्योंकि प्रत्येक समाजवादी आन्दोलन कर्ता चाहे वो जयप्रकाश नारायण हो, या अन्ना हजारे हो, या अरविन्द केजरीवाल हो या देश भर में हो रहे तमाम तरह के सत्याग्रह आन्दोलनकर्ता हो, सभी आन्दोलन शुरू करने से पूर्व गांधी जी को मानक मानते हुए अपने आन्दोलन को गांधीवादी होने का दावा और वादा अवश्य करते हैं। जैसे मध्यप्रदेश का जल सत्याग्रह आन्दोलन या ईरोम, शर्मिला चालू का निराहार सत्याग्रह या फिर चन्द्रबाबू नायडे का पृथक आन्ध्रा तेलंगाना को लेकर हुआ राजनैतिक आन्दोलन हो। ये सभी आन्दोलनकारी गांधी के सत्याग्रह एवं शांतिपूर्ण साधनों की प्रेरणा से परिवर्तन चाहते हैं।

यह गांधी के चमत्कारिक नेतृत्व की प्रेरणा ही है जो भारतीय राजनीतिक व्यवस्था और पाकिस्तान की राजनीतिक अव्यवस्था में अन्तर स्पष्ट करती है। पाकिस्तान में भी गांधी को प्रेरक पात्र माना होता तो आज वहां अराजकता की बजाय शांति होती।

गांधी के अनुसार युद्ध का निर्धारण युद्धस्थल में नहीं होता वरन् उसका स्थान तो मानव मस्तिष्क में है इसलिए व्यक्ति की मानसिकता को बदलने या उसका ह्रदय परिवर्तन करने की आवश्यकता है न कि युद्धस्थल में मोर्चा संभालने की। गांधी मानते है कि युद्ध व लड़ाईयां किसी भी समस्या का स्थायी हल नहीं है वरन् इसके परिणामस्वरूप विवाद की ओर बढ़ते ही जाते हैं। उदाहरण स्वरूप भारत पाकिस्तान, अरब–इजराईल आदि। गांधीजी मानते थे कि अस्त्र–शस्त्र की बजाय सत्य प्रेम, अहिंसा ही प्रगति का नियम है यदि विश्व समाज व मानवता को विनाश से बचाना है तो सत्य, अहिंसा, दया तथा शत्रु के प्रति उदारता एक मात्र मार्ग है।

न केवल आध्यात्मिक क्षेत्र बल्कि आर्थिक क्षेत्र में स्वदेशी एवं विकेन्द्रीकरण की धारणा आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। संविधान निर्माताओं ने भले ही संविधान में नीति–निर्देशक तत्वों के रूप में उनके विचारों को स्थान दिया हो। स्वाधीनता के पश्चात् देश में चाहे जिस दल की सरकार रही है। उसने गांधी की विचारधारा व सिद्धान्तों को अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपनाया है। चाहे अंतोदय योजना हो या मद्य निषेध की बात हो, महिलाओं की शिक्षा व सामाजिक स्थिति की बात हो या दलितों के आरक्षण की बात हो, चाहे लघु उद्योगों की परिकल्पना हो या सामाजिक समानता का सिद्धान्त हो सरकारें उनके विचारों को अपनी योजनाओं में स्थान देकर गौरवान्वित महसूस करती है, यह गांधी की प्रासंगिकता ही तो है।

गांधी ग्रामीण अर्थव्यवस्था के बारे में मानते थे कि एक छोटा ग्राम अपनी आवश्यकता की वस्तुओं का उत्पादन करे, भूमि का उपजाऊपन बनाये रखे, पानी की बचत हो और भूमि का जलस्तर भी बरकरार रहे। गांधी के आर्थिक विचार समन्वयकारी होने के कारण भारतीय परिस्थितियों के अत्यधिक सन्निकट है, किन्तु वर्तमान में यातायात के साधनों ने (रेल, पटरी, सड़क) आदि ने व्यक्ति या किसान में अत्यधिक संग्रहण और लाभ–लोभ की प्रवृत्ति को बढावा दिया है और वे ग्रामीण आवश्यकताओं को नजरअन्दाज करके अत्यधिक उत्पादन कर उन्हें अन्यत्र मंडियों में बेचकर मुनाफा कमाने में लग गये हैं। जिससे मानवोचित गुणों का हास हुआ है।

गांधी की स्वदेशी अवधारणा एक बहुआयामी अवधारणा है जिसका अर्थ है राजनीतिक समतामूलक तथा आर्थिक अभिव्यक्तियों का अविभेदित सम्मिश्रण। स्वदेशी एक अन्तराष्ट्रीय और सार्वदेशिक राजनैतिक अवधारणा है जिसका लक्ष्य स्वायत्त, स्वावलम्बी एवं लोकतान्त्रिक जीवनशैली की स्थापना है जिसकी धूरी

अपने आसपास के सामुदायिक जीवन की हो। स्वेदेशी को अपनाने के पीछे गांधी जी की मंशा एक ऐसी आर्थिक संरचना के निर्माण की थी, जिसमें समानता, स्वतंत्रता एवं बंधुत्व का भाव चरम पर हो।

गांधी एक ओर वर्तमान ज्वलन्त समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहते हैं कि वकील, न्यायाधीश और डॉक्टर का कार्य समाज सेवा करना होना चाहिए किन्तु, आज इनकी भूमिका नकारात्मक हो गई है। इन्होंने सामाजिक सेवा के कार्य को एक पेशा या धन्धा बना लिया है। समाज में नैतिक मूल्यों का पतन हो चुका है, भ्रष्टाचार ने विकराल रूप धारण कर लिया है। ऐसी परिस्थितियों में गांधी ऐसे वकीलों और न्यायाधीशों से बेहतर उन पंच पटेलों को मानते थे जो निःशुल्क या मामूली व्यय में चौपालों पर बैठकर शीघ्र न्याय प्रदान कर दिया करते थे। गांधी आज के लालची डॉक्टरों से बेहतर उन अनुभवों हकीमों को मानते थे जो कम खर्च में बीमारी ना बढ़ने वाली दवाई देते थे। गांधी के ये सरल उपाय आज भी प्रयोग में लाये जा सकते हैं।

गांधी जी ने हिन्द स्वराज्य में राजनैतिक शासन व्यवस्था, आदर्श राज्य, स्थायी शांति, अहिंसा, धर्म संबंधी सार्थक विचार प्रस्तुत किये हैं।

गांधी के धार्मिक विचारों से प्रभावित होकर भारत को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया गया है। गांधी धर्म को एक अस्त्र मानते थे जो मानवीय आचरण को व्यवस्थित करता है। अतः सभी धर्मों में विश्वास उनकी धर्मनिरपेक्ष छवि का परिचायक है।

सामाजिक क्षेत्र में गांधी जी लैंगिक समानता के भी उतने ही पक्षधर थे। भारतीय संविधान ने इसी विचार को सभी नागरिकों को चाहे वह स्त्री हो या पुरुष समानता का अधिकार देकर अपनाया। गांधी जी स्त्री को समाज में उचित स्थान देने हेतु शिक्षित एवं राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया में पुरुष के समान भागीदार बनाना चाहते थे। इन्हीं विचारों से प्रभावित होकर आने वाली सरकारों ने महिला आरक्षण को महत्ता दी तथा स्थानीय स्तर पर राजनीतिक भागीदारी हेतु 50 प्रतिशत महिला आरक्षण का प्रावधान किया तथा महिला शिक्षा हेतु योजनाएं बनाई।

वैश्विक स्तर पर भी आज पाश्चात्य सभ्यता के विघटन की प्रक्रिया चल रही है। एक नई सभ्यता का उदय हो रहा है। इस नई सभ्यता के लक्षण वहीं है जिसकी कल्पना गांधी जी ने की थी। नई उभर रही विश्व व्यवस्था में विज्ञानवाद, विकासवाद एवं राज्यवाद का प्रभाव है। पूरे विश्व में मौन एवं अहिंसक युद्ध की गूंज सुनाई दे रही है। पश्चिम की औद्योगिक सभ्यता को चुनौती दी जा रही है। प्रकृति के साथ सहाचर्य की पर्यावरणीय दृष्टि विकसित हो रही है। मनुष्य को व्यवस्था व टेक्नोलोजी की दासता से मुक्त करने का प्रयास हो रहा है। राज्य शक्ति के कन्धों पर लोकशक्ति को जगाने का दबाव हैं तथा राज्य शक्ति पर सत्याग्रह एवं अहिंसक उपाय अपनाने का आग्रह है। संक्षेप में सभी परिस्थितियों में गांधी चिंतन का स्वर मुखरित हो रहा है।

गांधी चिन्तन और दर्शन की विशिष्टा यह है कि गांधी किसी तथ्य, सत्य या उपाय को अन्तिम रूप से स्थायी नहीं मानते। गांधीवादी उपाय स्थायी समस्याओं के समसामायिक उपयों में विश्वास रखते हैं। वे स्वयं कहा करते थे कि जो विचार या समाधान मैं आज प्रस्तुत कर रहा हूं वो स्थायी नहीं है। मैं कल उसे परिस्थिति अनुसार बदल भी सकता हूं।

गांधी जी का लक्ष्य श्रेष्ठ को प्राप्त कर उत्कृष्ट समाज की रचना करना है। इस महामानव की दूरदृष्टि आज आधुनिक युग की आवश्यकता बन गई है। क्योंकि वैश्वीकरण और विकेन्द्रीकरण एक सिक्के

के दो पहलू है। भारतीय दर्शन के लिए विकेन्द्रीकरण आधारित वैश्विक व्यवस्था कोई नई बात नहीं है। क्योंकि हम तो जड़ चराचर से ही वसुधैव कुटुम्बकम तथा सर्वे भवन्तुः सुखिनः की भावना से जुड़े हुए है। गांधी जी का रास्ता अंततः संतृप्त मानवता के लिए सर्वाधिक उपयुक्त व भावी समाज के लिए सर्वस्वीकृत रास्ता हो सकता है। गांधी की प्रासंगिकता ना आज कम हुई है ना आने वाले समय में कम होगी। गांधी दर्शन भौतिकता व आधुनिकता के दौर में ठंड़ी छाव की तरह है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

⇒ गांधी मार्ग, जुलाई, अगस्त 1996

⇒ अभिनव राजनैतिक चिंतन की आवश्यकता रजनी कोठारी मूर्ति स्मृति व्याख्यान माला।

⇒ भारतीय समाज व्यवस्था पर गांधी के विचार, श्री कामेश्वर प्रसाद बहुगुणा 1970

⇒ गांधी मार्ग नवम्बर, दिसम्बर 2001

⇒ महात्मा गांधी का समाज दर्शन – डॉ. महादेव प्रसाद पृ. 37

⇒ गांधी पर उछले सवाल – नरेश भार्गव, मूल प्रश्न, जून, अगस्त, 2008

⇒ सत्य के साथ प्रयोग – मोहनदास करमचंद गांधी

⇒ आज के दौर में गांधी मूल प्रश्न – जून, अगस्त 2008

⇒ हिन्द स्वराज्य – मोहनदास करमचंद गांधी, 1944

❖◆❖